हंसध्वनि

गृह पत्रिका

जून, 2016

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

पवन हंस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)

Pawan Hans Limited
(A Government of India Enterprise)

पवन हंस का सफर

1985
शुभारंभ

1986
ओएनजीसी
के लिए
सेवाएं प्रारंभ

1987
इंडियन ऑयल लि.,
लक्षद्वीप समूह,
मिज़ोरम सरकार

1990
गेल इंडिया लि.
के लिए निगरानी सेवाएं
अरुणाचल प्रदेश सरकार

1996
गृह मंत्रालय,
पंजाब सरकार

1998
सिक्किम सरकार के लिए उड़ान सेवाएं,
अंटार्कटिक में अभियान

1999
मेघालय सरकार

2000
त्रिपुरा सरकार

2003
केदारनाथ, अमरनाथ में
तीर्थ यात्री सेवाएं

2006
बिहार सरकार को
हेलिकॉप्टर सेवाएं

2007
नागालैंड सरकार

2008
पीजीसीआईएल
के लिए पावर लाईन अनुरक्षण

2009
सीमा सुरक्षा बल के लिए
एएलएच का अनुरक्षण

2010
जीएसपीसी,
एनटीपीसी, राष्ट्रमंडल खेल हेतु सेवाएं

2011
हिमाचल सरकार,
महाराष्ट्र सरकार, ओडिशा सरकार

2013
पश्चिम बंगाल सरकार
हेतु संपर्क सेवाएं

2015
तिरुपति का विहंगम दृश्य

2016
रोहिणी हेलीपोर्ट,
दिल्ली

हंसध्वनि

संरक्षक
डॉ बी पी शर्मा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

प्रधान संपादक
ए सी परिछा
विभागाध्यक्ष (मासं एवं प्रशा)

संपादक मंडल
रजनीश कुमार सिन्हा
गणेश बर्मन
घनश्याम बसवाल
दीपक भगत
ज़ीनत इक़बाल
रेखा रानी

हंसध्वनि पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व संबंधित लेखकों का है। इनसे संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है।
पत्रिका में निहित रचनाओं के लिए पवन हंस प्रबंधन उत्तरदायी नहीं है।

संपादकीय कार्यालय
पवन हंस लिमिटेड
सी–14, सेक्टर–1,
नोएडा, 201301
दूरभाष: 0120 2476734
फैक्स:
0120–2476978
ई–मेल:
rajbhasha.ol@pawanhans.co.in

अनुक्रमणिका

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश 01
संपादकीय 02
कुएँ का मेंढक न बनें! 03
कैसे आया जूता 04
हास्यबोध 05
पवन हंस की चुनौतियाँ व प्रत्युत्तर 06
इंप्लाई ऑफ दि मंथ की कलम से 07
इंटॉलरेंस 09
उपनिषद की आहार एवं स्वास्थ्य संबंधी धारणा 10
पवन हंस में प्रचलित शब्द 12
राजभाषा हिंदी - नए टूल्स 13
भारतीय विमानन के सपने को साकार करते हुए 14
सुबह गुनगुने पानी में शहद डालकर पीने के लाभ 15
छाया संसार 17
राजभाषा संबंधी दायित्व 19

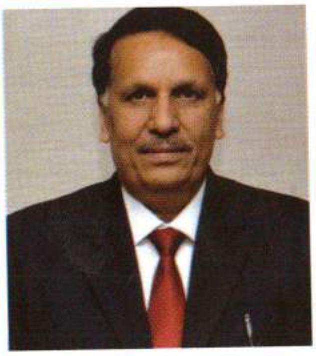

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

सामूहिक प्रयास और एकनिष्ठ इच्छा शक्ति से ही संगठन अपने लक्ष्यों को पूर्ण कर पाता है। एक राष्ट्रीय हेलीकॉप्टर परिचालक के रूप में हम देश को बांधने वाली जीवन रेखा हैं। सुदूर और दुर्गम इलाकों को देश की मुख्य धारा से जोड़ने वाली कड़ी हैं। अंडमान निकोबार व लक्षद्वीप समूह और पूर्वोत्तर के आम जनजीवन के लिए सबसे बड़ी आशा और उम्मीद की किरण हैं। कभी-कभी हमें अपने द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका के अहसास से गर्व की प्रखर अनुभूति होती है साथ ही उत्तरदायित्वों का बोध भी होता है।

अपने कर्तव्य बोध के आधार पर पवन हंस लिमिटेड जैसे राष्ट्रीय उपक्रम के लिए सामाजिक लक्ष्य कारपोरेट लक्ष्य से बढ़कर हैं बल्कि कहें कि कारपोरेट लक्ष्य और सामाजिक लक्ष्य के मध्य बड़ी ही बारीक विभाजक रेखा है जिसके मध्य अंतर कर पाना मुश्किल है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अपनी भूमिका को और सक्षमता से निभाने के लिए हम प्रत्येक सकारात्मक पहल का सम्मान करते हैं और अपनी कार्यप्रणाली में भी नित्य नए आयाम विकसित करने के लिए प्रयासरत हैं।

पवन हंस में हमने आकाश को छूते, प्रकृति को सहेजते, अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा मानकों पर खरा उतरते अपने पंखों को विस्तार दिया है। हमारे सामने एम.आर.ओ. कारोबार, सी-प्लेन परिचालन, स्मॉल एयरक्राफ्ट सेवाओं के साथ ही हेलीपोर्ट जैसे नए क्षितिज हैं। इन नए क्षितिजों को छूने के लिए हमने अपनी रणनीतिक यात्रा प्रारंभ कर दी है। अपनी इस भविष्योन्मुखी यात्रा को हमने हैदराबाद में संपन्न इंडिया एविएशन 2016 के दौरान प्रदर्शित किया और वैश्विक मंच पर अपनी क्षमताओं और उपलब्धियों को लेकर पहचान दर्ज कराई। इसके दौरान उद्योग के अन्य परिचालकों से विचार विनिमय के साथ उल्लेखनीय रूप से हमारा आईआरसीटीसी व एचएएल के साथ समझौता ज्ञापन हुआ।

मुझे आप सभी पवन हंस कर्मियों के सामर्थ्य और कर्तव्य निष्ठा पर पूरा विश्वास है। परिस्थितियां कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हों हम अपने मनोबल और दृढ़ संकल्प से अपने-अपने कार्य क्षेत्र में निरंतर उत्कृष्ट योगदान प्रस्तुत करते हुए पवन हंस लिमिटेड के क्षितिज का विस्तार करेंगे।

(डॉ. बी. पी. शर्मा)

संपादकीय

मित्रो,

विगत वर्ष पवन हंस ने अपनी स्थापना के 30 वर्ष पूर्ण किए और इन तीस वर्षों के दौरान घटित विशिष्ट उपलब्धियों को हमने एक विशेष समारोह में साझा किया ।

वस्तुतः नवीनता या परिवर्तन प्रकृति का नियम है और विजयी वही होता है जो सदैव परिवर्तन के लिए तत्पर रहता है । समय के साथ परिवर्तित न होने वाले इतिहास के अंग हो जाते हैं और प्रत्येक परिवर्तन के साथ सकारात्मक रूप से एकाकार होकर भविष्योन्मुखी सोच के साथ आगे बढ़ने वाले इतिहास बनाते हैं ।

पवन हंस में भी अनेक परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं । संगठन की आंतरिक कार्यप्रणाली के साथ-साथ पवन हंस के बाहरी आवरण में भी सकारात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया जारी है । पवन हंस का नया लोगो इस परिवर्तन को प्रतीकात्मक रूप से प्रतिबिम्बित करता है ।

आप सभी को सकारात्मक परिवर्तन की उर्जा से ओतप्रोत अभिवादन के साथ इस अंक को प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है ।

हमें उम्मीद है कि विविधतापूर्ण सामग्री और सतरंगी कलेवर में पवन हंस की गृहपत्रिका आपको अवश्य पसंद आएगी । पत्रिका के लिए सामग्री प्रेषित करने वाले पवन हंस कार्मिकों का मैं हार्दिक धन्यवाद करता हूँ साथ ही कामना करता हूँ कि आप सभी अपनी-अपनी विचारपूर्ण व स्तरीय सामग्री हम तक पहुँचाने की कृपा करेंगे व अंक से जुड़ी प्रतिक्रिया से भी हमें अवगत कराएंगे ।

(ए. सी. परिछा)

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

कुएँ का मेंढक न बनें!

दो टैडपोल एक कुँए में बड़ी मस्ती से घूम रहे थे। दोनों अपनी पूंछ हिलाते और बाकी मेंढकों को अपना खेल दिखाते।
उनकी शैतानियाँ देखकर एक वयस्क मेंढक बोला, "जितनी पूंछ हिलानी है हिला लो, कुछ दिन बाद ये गायब हो जायेगी।"
"हा-हा-हा....", ये सुनकर बाकी मेंढक हंसने लगे।
दोनों टैडपोल फौरन अपनी माँ के पास गए और उस मेंढक की बात बताते हुए बोले, "माँ, क्या सचमुच हमारी पूंछ गायब हो जायेगी?"
"हाँ!", माँ बोली, "यही प्रकृति का नियम है, जब हम पैदा होते हैं तो हमारी छोटी सी पूंछ होती है पर समय के साथ हम विकसित हो जाते हैं, ये पूंछ गायब हो जाती है और हमारे पैर निकल आते हैं, तब हम कुएँ के बाहर भी जा सकते हैं, लम्बी छलांगे मार सकते हैं और स्वादिष्ट कीड़े-मकौड़े खा सकते हैं।"
माँ की बात सुनकर पहले टैडपोल ने मन ही मन सोचा, "इससे पहले की पूंछ गायब हो मैं और मस्ती कर लेता हूँ, तालाब के कई चक्कर लगा लेता हूँ और एक से बढ़कर एक करतब दिखाता हूँ..." और ऐसा सोच कर वह दुबारा मस्ती से घुमने लगा।
वहीं दुसरे टैडपोल ने सोचा, "जब ये पूंछ एक दिन गायब ही हो जानी है तो इससे खेलने और मौज-मस्ती करने से क्या फायदा, जब पैर निकलेंगे तब मौज की जायेगी।", और वह कुएँ के एक हिस्से में गुमसुम सा रहने लगा।
फिर एक दिन वो भी आया जब दोनों टैडपोल मेंढक में विकसित हो गए। दोनों काफी खुश थे और फैसला किया कि वे तालाब से निकल कर बागीचे में सैर करने जायेंगे। पहला मेंढक किनारे पहुंचा और तेजी से छलांग लगा कर बाहर निकल गया। वहीं दुसरा मेंढक छलांग लगाने की कोशिश करता पर लगा ही नहीं पाता... मानो उसके पैरों में जान ही ना हो!
वह घबराया हुआ वापस अपनी माँ के पास पहुंचा और घबराते हुए बोला, "मेरे पैर काम क्यों नहीं कर रहे... मेरा भाई तो बड़े आराम से छलांग लगा कर बाहर निकल गया पर मैं ऐसा क्यों नहीं कर पा रहा ?" माँ बोली, "बेटे, ये तुम्हारी वजह से ही हुआ है, तुमने ये सोचकर की एक दिन पूंछ चली ही जानी है उसका इस्तेमाल ही बंद कर दिया और चुपचाप कोने में पड़े रहने लगे.. .मेरे समझाने पर भी तुम नहीं माने और इसी वजह से तुम्हारा शरीर कमजोर हो गया, जिन अंगो का विकास ठीक से होना चाहिए था वो नहीं हो पाया और अब जिन पैरों का तुम इतने दिनों से इंतजार कर रहे थे वे भी बेकार निकल गए....मुझे अफ़सोस है पर अब तुम्हें अपनी पूरी जिन्दगी कुएँ का मेंढक बन कर ही बितानी होगी!
कई बार इस वक्त जो हमारे जीवन में हो रहा है वो हमें बड़ा बेकार लगता है जैसे हमे लगता है कॉलेज की पढ़ाई का क्या मतलब है, इसे क्यों करें ? और हो सकता है आगे चल कर वाकई में इसका कोई सीधा फायदा न हो पर पढ़ाई करने में हम जो मेहनत करने की आदत डालते है, प्राबलम सॉल्विंग स्किल (समस्या निवारण दक्षता) विकसित करते हैं, वो कहीं न कहीं आगे भी हमारी लाइफ को बेहतर बनाती है।
इसी तरह अपने करीयर की शुरुआत में हो सकता है हमारा बॉस हमें ऐसे काम करने को दे जिसे करना हम अपनी तौहीन समझें पर बाद में जब हम खुद बॉस बनते हैं या अपना कोई बिजनेस शुरू करते हैं तो हमें समझ में आता है कि उस काम को करने से हमें कितना फायदा मिला। इसलिए आज के काम से इसलिए बचने की कोशिश मत करिए कि बाद में आपको ये काम नहीं करना है...बल्कि उस काम को इंजॉय कीजिये, उसे और अच्छे ढंग से करने का प्रयास करिए... तभी आपकी स्किल्स का विकास हो पायेगा और आपकी स्ट्रैंथ डेवलप हो पाएगी और जब भविष्य में आपको कुछ कर दिखाने का मौका मिलेगा तो आप सचमुच वो काम कर पाएंगे। वरना उस दूसरे मेंढक की तरह आप भी अपनी लिमिटेड एब्लिटीज के साथ कुएँ के मेंढक बनकर ही रह जायेगें।

"If we don't change, we don't grow. If we don't grow, we aren't really living." - Gail Sheehy

(अर्थात अगर हममें बदलाव नहीं हो रहा है तो हम आगे बढ़ेगे नहीं, यदि हम आगे बढ़ नहीं रहे है तो हम वास्तव में जी ही नहीं रहे हैं)

कुलभूषण मल्होत्रा
उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
उत्तरी क्षेत्र

बोधकथा
कहानी : कैसे आया जूता

एक बार की बात है एक राजा था। उसका एक बड़ा-सा राज्य था। एक दिन उसे देश घूमने का विचार आया और उसने देश भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह यात्रा से लौट कर अपने महल आया। उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कंकड़ पत्थर थे वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए।

कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि देश की संपूर्ण सड़कें चमड़े से ढंक दी जाएं। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी मना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था कि इस काम के लिए बहुत सारे रुपए की जरूरत थी लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने एक युक्ति निकाली। उसने राजा के पास जाकर डरते हुए कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूँ।

अगर आप इतने रुपयों को अनावश्यक रूप से बर्बाद न करना चाहें तो एक अच्छी तरकीब मेरे पास है। जिससे आपका काम भी हो जाएगा और अनावश्यक रुपयों की बर्बादी भी बच जाएगी। राजा आश्चर्यचकित था क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी आज्ञा न मानने की बात कही थी। उसने कहा बताओ क्या सुझाव है। मंत्री ने कहा कि पूरे देश की सड़कों को चमड़े से ढंकने के बजाय आप चमड़े के एक टुकड़े का उपयोग कर अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने अचरज की दृष्टि से मंत्री को देखा और उसके सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनवाने का आदेश दे दिया।

यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए जो ज्यादा उपयोगी हो। जल्दबाजी में अप्रायोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है। दूसरों के साथ बातचीत से भी अच्छे हल निकाले जा सकते हैं।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

हास्यबोध

राजा और सेवक

एक राजा था। उसने दस खूंखार जंगली कुत्ते पाल रखे थे।
उसके दरबारियों और मंत्रियों से जब कोई मामूली सी भी
गलती हो जाती तो वह उन्हें उन कुत्तों को ही खिला देता।
एक बार उसके एक विश्वासपात्र सेवक से एक छोटी सी भूल हो
गयी,
राजा ने उसे भी उन्हीं कुत्तों के सामने डालने का हुक्म सुना दिया।
उस सेवक ने उसे अपने दस साल की सेवा का वास्ता दिया,
मगर राजा ने उसकी एक न सुनी।
फिर उसने अपने लिए दस दिन की मोहलत माँगी जो उसे मिल
गयी।
अब वह आदमी उन कुत्तों के रखवाले और सेवक के पास गया
और उससे विनती की कि वह उसे दस दिन के लिए अपने साथ
काम
करने का अवसर दे।
किस्मत उसके साथ थी, उस रखवाले ने उसे अपने साथ रख लिया।
दस दिनों तक उसने उन कुत्तों को खिलाया, पिलाया, नहलाया,
सहलाया और खूब सेवा की।
आखिर फैसले वाले दिन राजा ने जब उसे उन कुत्तों के सामने
फेंकवा
दिया तो वे उसे चाटने लगे,
उसके सामने दुम हिलाने और लोटने लगे।
राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ।
उसके पूछने पर उस आदमी ने बताया कि महाराज इन कुत्तों ने मेरी
मात्र दस दिन की सेवा का इतना मान दिया
बस महाराज ने वर्षों की सेवा को एक छोटी सी भूल पर भुला दिया।
राजा को अपनी गलती का अहसास हो गया।
और उसने उस आदमी को तुरंत

भूखे मगरमच्छों के सामने डलवा दिया।

आखिरी फैसला मैनेजमेंट का ही होता है
उसपर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता....
सभी कर्मचारियों को समर्पित!! 😛😛😛

तगड़ा पहलवान और कंडक्टर

खूब लंबा-तगड़ा एक पहलवान बस में चढ़ा।
कंडक्टर: भाई साहब, टिकट?
पहलवान: हम टिकट नहीं लेते।
कंडक्टर डर के मारे कुछ नहीं कर सका।
लेकिन कंडक्टर ने इस बात को दिल पर ले लिया।
कंडक्टर जिम जाकर खूब मेहनत करने लगा।
पहलवान रोज बस में चढ़ता।
कंडक्टर रोज पूछता: भाई साहब, टिकट?
पहलवान रोज जवाब देता: हम टिकट नहीं लेते।
कण्डक्टर ने बात को दिल पर ले ली थी
उसकी रातों की नींद उड़ गई
खून खौल उठा..
5 महीने में कंडक्टर जिम में कसरत करके पहलवान की तरह तगड़ा हो गया।
पहलवान फिर बस में चढ़ा।
कंडक्टर: भाई, टिकट ले ले।
पहलवान: हम टिकट नहीं लेते।
कंडक्टर छाती चौड़ी करके बोला
:क्यों नहीं लेता बे?
पहलवान: पास बनवा रखा है,
इसीलिए नहीं लेता।

कुछ बातें दिल पे नहीं लेनी चाहिए!!

😛😛😛

पवन हंस की चुनौतियाँ व प्रत्युत्तर

पवन हंस राष्ट्रीय हेलीकॉप्टर परिचालक के रूप में नितांत अहम भूमिका का निष्पादन करता है । भारत जैसे विषम भौगोलिक परिदृश्य वाले देश में सुदूर व पहाड़ी क्षेत्रों में आवागमन को सुगम बनाने में पवन हंस प्रभावी भूमिका निभाता है । पवन हंस की इस प्रकार की प्रभावी भूमिका के लिए विभिन्न प्रशस्ति पत्र और पुरस्कार समय-समय पर प्राप्त होते रहते हैं । इन पुरस्कारों के माध्यम से हम प्रेरित प्रोत्साहित होते हैं और हमारे पंखों को विस्तार मिलता है । पवन हंस को दुनिया भर में एरियल इंजन बेड़े की सफलता के लिए अपने समग्र योगदान के लिए टर्बोमेका द्वारा उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । पवन हंस लिमिटेड ने एसोचैम से वर्ष 2016 में दूरस्थ एवं क्षेत्रीय हवाई संपर्क को बढ़ावा देने के लिए सर्वश्रेष्ठ जनरल एविएशन कंपनी, पुरस्कार प्राप्त किया है । पुनः, पवन हंस ने प्रगति मैदान में, 11 वीं सरकारी उपलब्धियां और योजनाएं एक्सपो 2015 में भाग लिया और पहला पुरस्कार जीता साथ ही पवन हंस ने उत्तर पूर्व राज्यों के मध्य सम्पर्कता उपलब्ध कराने वाली सर्वोत्कृष्ट नागर विमानन कंपनी के लिए "टूडेज ट्रेव्लर अवार्ड 2015" जीता ।

सुदूर व दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में परिवहन के साधन के रूप में पवन हंस द्वारा उत्तर पूर्व में अनेक प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं । हमारे कर्तव्य क्षेत्रों में नियमित यात्री सेवाओं के माध्यम से दुर्गम क्षेत्रों को जोड़ना व आपातकालीन स्थिति में तत्क्षण अपरिहार्य सेवा प्रदान करना व चिकित्सकीय उद्देश्यों के लिए निकासी सहित बाढ़ व भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के समय राहत व बचाव कार्य सबसे महत्वपूर्ण है । पुनः अतिविशिष्ठ जनों के परिवहन व पर्यटन के लिए उपलब्ध कराई जाने वाली सेवा की भी नितांत अहम भूमिका है ।

वर्तमान में हम उत्तर पूर्व में 155 साप्ताहिक उड़ानों के साथ 64 सेक्टरों में 33 स्थानों के लिए नियमित हेलीकॉप्टर सेवाएं संचालित कर रहे हैं ।

सबसे उल्लेखनीय रूप से पवन हंस ने वित्तीय वर्ष 2014-15 के लिए रु. 7.76 करोड़ के लाभांश की घोषणा की तदनुसार पवन हंस में भारत सरकार की शेयरधारिता प्रतिशत के रूप में 51% के लिए रु. 3,95,84,735/- करोड़ के अंशदान का चेक अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा माननीय नागर विमानन मंत्री महोदय को व 49%अंशदान हेतु 3,80,32,392 का चेक ओएनजीसी को प्रदान किया जाना हमारे लिए अत्यंत गर्व की बात है । वस्तुतः हम सही अर्थों में लाभांश अदाकर्ता लाभ अर्जक संगठन - डिविडेंट पेयिंग प्रोफिट मेकिंग ओर्गनाइजेशन - हैं ।

पवन हंस की कारोबारी पहलों के रूप में मुम्बई में एमटीडीसी के सौजन्य से मुम्बई दर्शन और गोवा दर्शन की सेवाओं का अपना महत्व है । हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों के माध्यम से प्राप्त नए कारोबारी अवसरों में एक एएस 350बी 3 हेलीकाप्टर के लिए आयल इंडिया लिमिटेड से किए अनुबंध से हमें चार वर्षों के लिए ऑयल इंडिया लिमिटेड के पाइपलाइनों की परियोजना हेतु कार्यादेश प्राप्त हुआ है ।

पवन हंस द्वारा निर्मित नई अवसंरचना रोहिणी हेलीपोर्ट में एचएएल के माध्यम से विकसित किए जाने वाले एमआरओ सुविधाओं के लिए पवन हंस द्वारा एचएएल से अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए हैं ।

एक और नई महत्वाकांक्षी परियोजना के रूप में भारत में हेली पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए और साथ ही ब्रांड पीएचएल को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाने के लिए आईआरसीटीसी के पोर्टल के माध्यम से पवन हंस की ब्रांडिंग हेतु समझौता पर हस्ताक्षर किया गया है ।

पवन हंस द्वारा प्रादान की जाने वाली सेवाओं में विस्तार व अनुबंधों के नवीकरण से भी हमारी स्थिति सुदृढ़ होती है । इस रूप में श्रीअमरनाथजी श्राइन बोर्ड व गृह मंत्रालय हेतु प्रदान की जाने वाली सेवाओं हेतु हमें विस्तार मिला है । एक और करार पर पवन हंस द्वारा महाराष्ट्र पुलिस के साथ हस्ताक्षर किया गया है जो मूलतः नक्सल विरोधी गतिविधियों के लिए एक ध्रुव हेलीकॉप्टर की तैनाती मेसर्स एचएएल से वेट लीज आधार पर लिए एक ध्रुव हेलीकॉप्टर के द्वारा हो सकी है ।

नवीन कारोबारी पहलों के क्रम में उ.पू. राज्यों में फिक्स विंग परिचालनों के लिए संयुक्त उद्यम कंपनी को स्थापित करने के लिए एक प्रस्ताव नागर विमानन मंत्रालय को प्रस्तुत किया गया है ।

पवन हंस ने एक एएस 350 बी3 हेलीकॉप्टर की तैनाती के माध्यम से श्रीकेदारनाथजी यात्रा के लिए दिनांक 09 मई, 2016 से दिनांक 25 जून, 2016 तक फाटा-केदारनाथ-फाटा के लिए हेलीकॉप्टर सेवाएं प्रारंभ की हैं । इस अवधि के दौरान 276 घंटे की अनुमानित उड़ान के माध्यम से 1230 यात्रियों को परिचालित किया गया और रु. 3,91,58,340 के राजस्व की प्राप्ति हुई साथ ही श्री केदारनाथजी तीर्थयात्रा हेतु चार्टर किराए से रु. 10 लाख के अतिरिक्त राजस्व का सृजन हुआ है ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हम इसी प्रकार का सकारात्मक प्रदर्शन भविष्य में सतत उर्जा व उत्साह के साथ दुहराते हुए पवन हंस के पंखों को और प्रबल करने में सफल होंगे और प्रेरणा व प्रोत्साहन की नई कहानी लिख रहे होंगे ।

प्रस्तुतिः
विपणन विभाग
प्रधान कार्यालय

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

इंप्लाई ऑफ दि मंथ की कलम से

एक बड़े मशहूर हॉलीवुड अभिनेता की प्रसिद्ध उक्ति है कि " रातों रात स्टार बनने में मुझे 25 साल लगे।"

माह फरवरी, 2016 के लिए जब मुझे इंप्लाई ऑफ दि मंथ के रूप में चुना गया तो मेरे सहकर्मियों द्वारा इसका अत्यंत सकारात्मक उत्साह व उमंग से स्वागत किया गया और आदरणीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय से प्रशस्ति प्रमाण पत्र और इंप्लाई ऑफ दि मंथ के बैच को ग्रहण करते हुए आंतरिक प्रेरणा से वशीभूत होकर मैने उपस्थित पवन हंस परिवार के प्रत्येक सदस्य का धन्यवाद ज्ञापन किया और अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सभा के समक्ष पवन हंस परिवार में अपनी यात्रा को साझा किया। इस क्रम में मैंने पाया कि बेहतर या सर्वोत्तम कर्मचारी के रूप में चयनित करके पवन हंस लिमिटेड ने मेरी क्षमताओं को जहां प्रतिष्ठित किया है वहीं उत्तरदायित्व के बोध को भी बढ़ा दिया है। मुझमें स्वत: प्रेरणा से ही प्रबंधन की कारोबारी रणनीति के आधार पर ओनरशिप का भाव आना चाहिए इसका एहसास हुआ। लगा कि अब-तक भी मैं पवन हंस में एक कर्मठ योद्धा की भांति सतत, सक्रिय, समर्पण भाव से अपने कार्य में व्यस्त रहता था तथापि एक कार्मिक के रूप में स्वयं को देखने से बढ़कर संगठन के एक जिम्मेदार कार्मिक के रूप में स्वयं को मानने की भावना का बोध हुआ और इस बोध ने पवन हंस के एक कार्मिक के रूप में अपनी जीवन यात्रा को लेखनी बद्ध करने की प्रेरणा दी और फिर मैंने सोचा कि क्यों न अपने द्वारा की गई उल्लेखनीय उपलब्धियों को साझा किया जाए ?

मैं हमेशा से यह मानता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति में असीम, अनंत, संभावनाएं, दक्षताएं और प्रतिभाएं होती हैं। उन प्रतिभाओं को एक सही मार्गदर्शक या मानव संसाधन प्रबंधक या नियंत्रक अधिकारी पहचान जाता है और अपनी युक्तियों के प्रभावी इस्तेमाल से मानव क्षमता का प्रभावी उन्नयन कर पाता है। इस रूप में मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे अपने करियर की शुरुआत से ही ऐसे अधिकारी मिले जिन्होंने मेरी क्षमताओं पर भरोसा किया व मुझे अपने कार्यक्षेत्र की संभावनाओं व चुनौतियों के लिए नए नए समाधान तलाशने के लिए सर्वदा प्रेरित किया। मुझे लगता है कि मेरा स्वयं में विश्वास इससे बढ़ता ही गया और मैं अपने कार्यक्षेत्र की चुनौतियों का सक्षमता से सामना कर पाने में समर्थ सिद्ध हुआ। अपने करियर के इस पड़ाव पर मैं अपने वर्तमान विभागाध्यक्ष श्री डी सहाय सर के साथ अपने पूर्व विभागाध्यक्ष व वर्तमान कार्यपालक निदेशक महोदय श्री संजीव बहल का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होने मेरी क्षमताओं को पहचान कर प्रत्येक कदम पर मेरी हौसला आफजाई की। मैं अपने पूर्व अधिकारी श्री रंजीत सिंह जी का भी कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं जिन्होने प्रबंधन के प्रत्येक पहलू से अवगत कराने की प्रेरणा प्रदान की और वरिष्ठ अधिकारी से बढ़कर मित्रवत मेरा मार्गदर्शन किया।

अब अपने वक्तव्य की शुरुआत में अंकित पंक्ति की प्रेरणा से मेरी कहानी पवन हंस में मेरी जीवन यात्रा प्रारंभ हुई दिनांक 1 जून, 1995 को उस समय, अर्थात अपनी नियुक्ति के समय मेरी योग्यता दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.कॉम (प्रतिष्ठा) की थी और मेरे पास उत्तर प्रदेश सरकार के अधिकारी के रूप में चार वर्ष के अनुभव सहित कुल सात वर्षों का कार्यगत अनुभव था।

पवन हंस में अपना योगदान प्रस्तुत करने के उपरांत मैंने अपने कार्य से शेयरधारकों की परिसंपत्तियों में वृद्धि करने हेतु प्रत्येक संभव प्रयास किया। कंपनी के लिए अपने प्रयासों को समर्पित करने के साथ ही मैंने 1997 में पीजीडीएफएम, 2000 में एमबीए (फिनांस) और 2007 में एलएलबी की व्यावसायिक योग्यता वाली उपलब्धियां अर्जित की। इन व्यावसायिक योग्यताओं को अर्जित करने के पीछे कहीं न कहीं प्रेरणा के रूप में अपने कार्यक्षेत्र की चुनौतियों का और सक्षमता से सामना करने की एकमात्र भावना रही क्योंकि अपने कैरियर की शुरुआत से ही अर्थात वर्ष 1995 से ही प्रबंधन द्वारा पवन हंस के कर संबंधी मामलों को देखने की जिम्मेदारी मुझे प्रदान किए जाने के कारण मुझे सदैव लगा कि अपना सर्वोत्तम प्रस्तुत करने के लिए जिन-जिन कदमों की अपेक्षा हो उन्हें अवश्य ही उठाना चाहिए। मैंने अपने वक्तव्य में अपने जिन सीनियर ऑफिसर्स का जिक्र किया है उनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन का मैं सदा आभारी रहूँगा साथ ही मेरा यह मानना है कि किसी भी संगठन में आउटपुट के लिए प्रभावी सुपरवीजन अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक कार्मिक के द्वारा निष्पादित की जाने वाली भूमिकाओं में और ज्यादा निखार या कहें कि सुधार के लिए उसके कंधे को थपथपाने वाले सुपरवाइजर की बहुत बड़ी भूमिका होती है। जिन विभागों में एक प्रभावी सुपरवाइजर का अभाव है उन विभागों में प्रेरणा का भी अभाव है आउटपुट का अभाव है और एक तरह की अव्यवस्था है।

बहरहाल मैं भाग्यशाली हूँ कि मैंने अपने कार्यक्षेत्र में अनेक उपलब्धियां हासिल की और कंपनी के साथ-साथ स्वयं भी एक संतुष्ट कार्मिक के तौर पर गौरवान्वित महसूस करता हूँ। मुझे कभी-कभी अपने द्वारा निभाई भूमिकाओं के प्रभावी निष्पादन से आंतरिक प्रेरणा प्राप्त होती है। "इंप्लाई ऑफ दि मंथ" के रूप में अपने चयन के माध्यम से ही सही मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक कार्मिक स्वयं में इसी प्रकार की आंतरिक प्रेरणा महसूस करे। मुझे लगता है कि वर्ष 1995 में कर विभाग से रु. 46.49 करोड़ के निवेश भत्ते की गणना के स्वीकार के पश्चात कंपनी को हुई रु. 20 करोड़ की कर बचत में मेरी भी नितांत अहम भूमिका रही। कर विभाग से दावे के अंतिम वर्ष के रूप में 1995-96 के दौरान भी रु. 11.763 करोड़ की आय कर बचत के पीछे कर योग्य आय में रु. 24.14 करोड़ की कमी का फायदा आंकलन वर्ष 1994-95 के लिए आंकलन आदेश 31.01.1996 के आधार

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

पर हुआ था और इसके लिए भी मैने हरसंभव प्रयास किया था। इसी तरह की एक और भूमिका का मुझे स्मरण होता है वर्ष 2008–10 के दौरान जब रु. 47.70 करोड़ की कर मांग को अमान्य ठहराया गया। वर्ष 1999 में कर विभाग ने आंकलन वर्ष 1997–98 के लिए विभिन्न अस्वीकरणों के विरुद्ध रु. 44.49 करोड़ की मांग उठाई। मेरे सकारात्मक प्रयास से यह 2000 में घट कर यह रु. 8.30 करोड़ हो गया, जिससे कंपनी को रु. 36. 19 करोड़ की बचत हुई। इसी तरह आंकलन वर्ष 1993–94, 2013–2014 के मध्य आईटी विभाग से लगभग रु. 115 करोड़ का समायोजन प्रतिदय हुआ। वर्ष 2013 में मैने डीपीई के दिशा निर्देशों पर पवन हंस की "पेंशन पॉलिसी" को प्रारंभ करने का प्रयास किया। जिसको वर्ष 2015 तक सफलतापूर्वक कार्यान्वित कर दिया गया, जिससे आज की तारीख में लगभग 60 परिवारों को पवन हंस की तरफ से एलआईसी द्वारा पेंशन मिल रही है। आगे, 2016 के माह फरवरी मार्च में आईसीआईसीआई बैंक के साथ "पेमेंट गेटवे" का प्रारंभ और कार्यान्वयन किया। वर्ष 2016 में भी और उपलब्धियां अभी बाकी हैं। मैं पवन हंस द्वारा प्रारंभ इंप्लाई ऑफ दि मंथ योजना की सफलता की कामना करता हूँ, और उम्मीद करता हूँ कि इस योजना का लाभ उठाकर प्रत्येक कार्मिक पवन हंस की प्रगति में अपना भरपूर योगदान देगा।

श्री आनंद कुमार
अनुभाग अधिकारी (वि. एवं ले. विभाग)
प्रधान कार्यालय

इंप्लाई ऑफ दि मंथ

हमारे वर्तमान अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा विगत वर्ष पदभार ग्रहण करने के उपरांत पवन हंस लिमिटेड कार्मिकों के मध्य एक सकारात्मक वातावरण तैयार करने व कंपनी के प्रति एक तरह के ओनरशिप की भावना विकसित करने के उद्देश्य से इंप्लाई ऑफ दि मंथ योजना का शुभारंभ करवाया गया था।

प्रधान कार्यालय व क्षेत्रीय कार्यालयों के स्तर पर इस योजना के अंतर्गत क्रमशः अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक व क्षेत्रीय प्रमुखों की अध्यक्षता में एक निर्णायक समिति द्वारा प्रति माह किसी एक कार्मिक को माह के उत्कृष्ट कार्मिक के रूप में इंप्लाई ऑफ दि मंथ घोषित किया जाता है। प्रधान कार्यालय के स्तर पर अब तक चयनित "इंप्लाई ऑफ दि मंथ कार्मिक"

जुलाई – 2015
श्री एस पी राणा
परिचालन सहायक,
परिचालन विभाग

अगस्त – 2015
सुश्री संतोष दुटेजा
अनुभाग अधिकारी,
वित्त एवं लेखा विभाग

सितंबर – 2015
सुश्री अंजली बक्शी
अधिकारी (निगम मामले),
निगम मामले विभाग

अक्टूबर – 2015
श्री राकेश कुमार
अनुभाग अधिकारी,
वित्त एवं लेखा विभाग

नवंबर – 2015
सुश्री रेखा रानी
हिंदी आशुलिपिक
टंकक,
राजभाषा विभाग

दिसंबर – 2015
सुश्री सरिता मित्रा
कनिष्ठ अनुभाग
अधिकारी,
प्रशासन विभाग

जनवरी – 2016
श्री सुनील मैथ्यू
ऑफिस अटेंडेंड
प्रशासन विभाग

फरवरी – 2016
श्री आनंद कुमार
अनुभाग अधिकारी
वि. एवं ले. विभाग

मार्च – 2016
श्री संजीव कुमार
कनिष्ठ सचिव अधिकारी
विपणन विभाग

अप्रैल – 2016
श्री प्रदीप कुमार
सचिवीय सहायक
वि. एवं ले. विभाग

मई – 2016
श्री जंगवीर सिंह
अनुभाग अधिकारी
प्रशासन विभाग

जून – 2016
दीपक कुमार
अधिकारी (प्रशासन)
मासं एवं प्रशा विभाग

जुलाई – 2016
संजय कुमार
इंफोकॉम सहायक
इंफो सेवा विभाग

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

इंटॉलरेंस

आज कल यह शब्द आप कहीं न कहीं सुन ही लेते होंगे। कभी समाचार में, कभी अखबार में, मेट्रो में, बस में या रेड लाइट पर, इस शब्द का तो जैसे चलन सा चल पड़ा है। इंटॉलरेंस गुस्से का पर्यायवाची सा बन गया है। आज अगर आपने किसी को दो बाते बोल दी या कहीं अपने विचार रखे नहीं कि भई लोगों ने इंटॉलरेंस का शोर मचाना शुरू कर दिया।

इसकी एक मिसाल कुछ दिन पहले ही हमने देखी थी कहीं किसी इंवेट पर एक जाने माने अभिनेता के इतना कहने भर की देर थी की उनकी पत्नी आज कल के माहौल को देखकर यह देश छोड़ कर दूसरे देश जाने की सोच रही हैं... बस फिर क्या था लोग भड़क गए शोर मच गया कि हम यह बात टॉलरेट नहीं करेंगे, आपने ये बोला भी कैसे? अरे भई! बोलने से पहले सोचो तो सही, उस अभिनेता ने आपके घर आकर अपनी राय नहीं रखी थी, उससे सवाल पूछा गया था और उसने जवाब में कहा था कि मेरी पत्नी आजकल ऐसा सोच रही हैं। इस देश में अपनी राय रखने पर तो कोई पाबंदी नहीं है और सोचने पर तो बिल्कुल नहीं है। अगर है तो आपका ये इंटॉलरेंस तब कहां चला जाता है जब कोई एक पूरे हुजूम को असामाजिक और अनैतिक तत्वों के लिए भड़का रहा होता है, धर्म के नाम पर राजनीति कर रहा होता है, तब तो आप कहीं नहीं दिखते। चलो ये तो था एक किस्सा अब अगर मेरी बात पर यकीन न हो तो दूसरा सुनो।

आप में से कई लोग रोज घर से ऑफिस का सफर करते हैं और रास्ते में कई तरह के लोग भी मिलते होंगे। आपने अक्सर रास्ते में ट्रैफिक होने की शिकायत की होगी और मज़े की बात ये है कि रेड लाइट के अलावा अक्सर ट्रैफिक जाम दो लोगों के लड़ने से होता है, एक की गाड़ी ने दूसरे की गाड़ी को टक्कर मारी नहीं की, दूसरे ने बीच सड़क पर गाड़ी रोकी और लगे करने एक दूसरे की मां-बहनों को याद.... दिल इतने पर भी नहीं भरा तो हाथा-पाई भी हो जाती है। खैर ये दोनों लोग तो लड़ लिए, बेचारे आम लोग "द मैंगो पीपल" को इन दोनों भाईयों ने मिल कर अब कुछ नहीं तो आधे किलोमीटर के लंबे ट्रैफिक जाम की सौगात दी है।

बीते दिनों एक दुखद घटना सुर्खियों में आई थी की किस तरह लोगों के एक झुंड ने मिल कर एक डॉक्टर को उसके घर के बाहर एक छोटी सी बात के लिए मार डाला। सुन कर दुख होता है छोटी सी बात का ये रिएक्शन? और उसकी बात गलत भी नहीं थी! फिर ये रिएक्शन क्यों? पुलिस ने सवाल किया तो जवाब आया बस गुस्सा आ गया था.........

सच तो ये है कि ये लोग रिएक्ट पहले करते हैं और समझते बाद में हैं, दूसरे शब्दो में समझना चाहते ही नहीं हैं। ये तो एक भेड़चाल है जैसे भेड़े बिना सोचे समझे एक दूसरे के पीछे चलती हैं वैसे ही हम इंसान जानवरों से ज्यादा समझदार होते हुए भी अपनी समझ का प्रयोग नहीं करते हैं। हम लोग बात-बात पर गुस्सा करते हैं या यू कहिए की मरने मारने को तैयार रहते हैं और सोने पर सुहागा ये है... कि जिसकी गलती होती है वो अपनी गलत बात पर अड़ा रहता है या दोनों पक्ष ही अपने आप को सही समझते हैं और एडजस्ट कोई नहीं करना चाहता है। मज़े की बात तो ये है कि हम ही जज है, हम ही पुलिस है, हम ही कानून व्यवस्था बन जाते है और फैसला सुना देते हैं दूसरे पक्ष को तो सुनना ही नहीं है, तर्क वितर्क का तो सवाल ही नहीं उठता।

अरे भई! इंटॉलरेंस दिखाना है तो वहां दिखाओं न जहां दिखाना अच्छा है जैसे अन्याय के खिलाफ, धर्म के नाम पर राजनीति करने वाले लोगों के खिलाफ, हिंसा का समर्थन करने वालों के खिलाफ ऐसे कितने ही मुद्दे हैं जिन्होंने समाज को दुषित किया हुआ है। वहां नहीं जिससे किसी की मान-हानि हो, जान जाए, सम्मान को ठेस पहुंचे क्योंकि आज के युग में कोई महात्मा नहीं है।

और हां मुझे टॉलरेट करने के लिए धन्यवाद......!

ज़ीनत इक़बाल
(हिंदी अनुवादक)
प्रधान कार्यालय

अंतरराष्ट्रीय योग, दिवस दिनांक 21 जून 2016 हेतु विशेष आलेख

उपनिषद की आहार एवं स्वास्थ्य संबंधी धारणा

जब खाने की बात आती है तो हम मुँह से ही खाने की बात को जानते हैं किन्तु माण्डुक्य उपनिषद के अनुसार आहार के व्यापक रूप का ज्ञान होता है:-

जागरित स्थानो बहिः प्रज्ञः सप्तांग एकोनविनशति मुखः।
स्थूलभुक वेशवनरः प्रथम पादः॥

यहाँ पर एक साथ तीन तथ्यों पर प्रकाश डाला है। एक, हम विविध चार अवस्थाओं में जीवन जीते हैं; जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्त एवं तुरीय और इन सभी अवस्थाओं में हम खाना खा रहे हैं। प्रस्तुत सूत्र में जाग्रत अवस्था में खाने की प्रक्रिया का वर्णन है। दो, शरीर में खाने वाली एक अंतरशक्ति होती है जिसे यहां वैश्वानर कहा है। तीन, यह वैश्वानर सप्तांग शरीर के उन्नीस मार्गों से आहार ग्रहण करता है। शरीर के सप्तांग अर्थात सिर कण्ठ, छाती, पेट, ज्ञानेन्द्रियां, नाक, कान, हाथ और पैर एवं उन्नीस मुख हैं: पाँच ज्ञानेन्द्रिय नाक, कान, आँख, जीभ, त्वचा, पाँच कर्मेन्द्रियां हाथ, पैर, जननेन्द्रिय, गुदाद्वार एवं जीभ। पाँच वायु: अपान, समान, प्राण, उड़ान एवं व्यान तथा चार अंतर्घटक मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार सभी रोगों का मूल कारण अनुचित भोजन है। उदाहरण के तौर पर आयुर्वेद के निम्न श्लोक को देखें:-

भेश्जैर्बिना व्याधि पथ्यादेव निवर्तते।
न तु पथ्यविहीनस्य भेषजानां शतैरपी॥

अर्थात बिना दवा के रोग केवल पथ्य या उचित भोजन से चले जायेंगे, लेकिन सौ प्रकार की दवाओं से भी रोग नहीं जायेंगे, यदि भोजन अनुचित है। अत: आहार संकल्पना को ठीक से समझने के लिए माण्डुक्य उपनिषद में कहे गए उन्नीस मुखों से लिए जा रहे भोजन पर विचार करना होगा। भोजन की प्रक्रिया में शरीर के सातों अंगों और उन्नीस मुखों का सहकार्य होता है। इनमें से एक घटक का भी सहकार्य न हो तो भोजन ग्रहण करने की प्रक्रिया प्रभावित होती है। उदाहरणार्थ, शरीर के सातों अंगों में से एक अंग भी रुग्ण अथवा असामान्य होगा, तो भोजन प्रक्रिया सुखकर नहीं होगी। जैसे यदि सिर दुख रहा है, साँसे बढ़ी हुई है पेट भरा सा है, हाथ पैर दुख रहे हैं तो भोजन का आनंद नहीं लिया जा सकता। इसी प्रकार पांचों ज्ञानेन्द्रियां, पाँचो कर्मेन्द्रियां, पांचों वायु तथा चारों अंतर्घटकों में से किसी भी एक के रुग्ण अथवा असामान्य होने पर भोजन की क्रिया बिगड जाएगी। उदाहरणार्थ, यदि आँखे टीवी पर लगी हुई हैं, कान गाने सुनने में व्यस्त हैं, नाक सर्दी के कारण बंद हैं, जीभ बोलने में मशगूल है, चित्त कहीं और है,मन विक्षिप्त, बुद्धि विकारग्रस्त, अहंकार अहम भाव से पुष्ट है तो अन्न ग्रहण न तो पोशक होगा, न तोशक कहने का तात्पर्य यह है कि भोजन पोशक, तोशक और कल्याणकारी तभी होगा, जब शरीर के सातों अंग एवं उन्नीस मुख स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे तथा लिया जाने वाला अन्न शरीर की प्रकृति एवं अवस्था के अनुकूल होगा।

उक्त मुखों में से एक मुख का भोजन भी गलत हो गया तो रोग का आगमन सुनिश्चित है। प्रथम हम ज्ञानेन्द्रियों के आहार के बारे में चर्चा करेंगे। हमारी पाँच ज्ञानेंद्रियाँ हैं आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा। आँखों का भोजन देखना, रूप, कानों का शब्द, ध्वनि, नाक का गंध, जीभ का स्वाद और त्वचा का स्पर्श। अब व्यक्ति इन इन्द्रियों से संबंधित आहार कब और कैसे एवं कितना लेता है, यही बात स्वास्थ्य या रोग का आधार बनती है। मुख्य बात है कि हमारे रोगों का कारण शक्ति का ह्रास है और जब हम ज्ञानेन्द्रियों के गलत एवं अधिक उपयोग से शक्ति खर्च कर डालते है तो रोगों का हमला हो जाता है और व्यक्ति रोग का शिकार हो जाता है।

ज्ञानेन्द्रियों के बाद अब पाँच कर्मेन्द्रियाँ आती हैं: गुदाद्वार , गुप्तांग, हाथ पैर एवं जीभ। इन पाँच कर्मेन्द्रियों द्वारा किए जाने वाले कार्य ही उनके आहार हैं। प्रकृति का सिद्धान्त है Use or loose अर्थात संबंधित वस्तु या अवयव का उपयोग होना चाहिए अन्यथा वह नष्ट हो जाएगा। पांचों कर्मेन्द्रियों का संयमित एवं यथाशक्ति उपयोग ही हमे रोगों से बचा सकता है।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

पाँच ज्ञानेन्द्रियों एवं पाँच कर्मेन्द्रियों के माध्यम से बाहर के कार्य एवं हलचल तो दिखाई देती हैं परंतु भीतर चलने वाले कार्य दिखाई नहीं देते जो पाँच वायुओं अर्थात अपान, समान, प्राण, उदान एवं व्यान द्वारा संपादित होते हैं। अपान के स्थान हैं पेडू प्रदेश, समान का नाभि प्रदेश, प्राण का हृदय प्रदेश, उदान का कण्ठ प्रदेश एवं व्यान का पूरा शरीर। ये पांचों वायु या पाँच प्राण अपने अपने स्थानों मे हलन चलन का कार्य करते है। उदाहरणार्थ, अपान का कार्य मलाशय का मल एवं मूत्राशय के मूत्र को निष्कासित करना, समान का कार्य अन्न के पाचन में मदद करना, प्राण का कार्य हृदय को स्पंदित रखना व रक्तभसरण मे सहकार्य करना, एवं उदान का कार्य फेफडों व स्वर यंत्र की मदद करना है। यहां भी इन पांच प्राणों को अधिक या कम कार्य मिलने पर उनकी कार्य क्षमता प्रभावित होती है फलतः रोगों का जन्म होता है। अंत में अंतरघटकों अर्थात मन, बुद्धि, अहंकार एवं चित्त की बात । मनुष्य को रुग्ण करने में इन चार घटकों की प्रमुख भूमिका होती है। "अमृतबिंदु उपनिषद में मन के दो प्रकार बताएँ हैं।

मनो हि द्विविधं प्रोक्तं शुद्धं अशुद्धं मेव च ।
अशुद्धं काम-संकल्पं शुद्धं काम-विवर्नितम् ।।

अर्थात मन दो प्रकार के होते हैं, अशुद्ध मन कामना ग्रस्त होता है और शुद्ध मन निष्काम होता है। अधिकांश लोगों का मन अशुद्ध अर्थात कामनाओं, इच्छाओं से ही अच्छादित होता है और यही मन रोगों का कारण होता हैं। क्योंकि कामनाएँ अनन्त है जो पूर्ण नहीं होतीं तथा उनके पूर्ण न होने पर तनाव एवं दबाव होता है जो विविध प्रकार की होती है। वैसे ही बुद्धि भी दो प्रकार की होती है निर्माणकारी और विनाशकारी, मंगलकारी एवं अमंगलकारी। मानवीय चित्त बड़े तालाब या समुद्र की तरह है जिसमें हमेशा लहर या तरंगे उठती एवं नष्ट होती हैं। महर्षि पतंजलि ने चित्त में वृत्त अर्थात लहरें जगाने वाले पांच घटक बताए हैंरू प्रमाण (प्रत्यक्ष ज्ञान), विवर्यय (असत्य ज्ञान या भ्रम जैसे रस्सी को सांप समझना), विकल्प (शब्द कल्पना), स्मृतिः (भूतकाल की यादें), निद्रा (भविष्य में होने वाली संभावनाएं) मनुष्य के चित्त में ये पांच घटक लगातार लहरे या तरंगें उठाते रहते हैं जो उसके रोगों का कारण बनती है। मनुष्य के रोगों का अंतिम कारण है उसका अहंकार। महर्षि अष्टावक्र का यह श्लोक इस संदर्भ में माननीय हैः-

अहं कर्तेनि अहंमान महा कृष्णा हिंदशितरू।
नाहं कर्तेनि इति विश्वास अमृतम् वा सुखी भव।।

अहंकार रूपी बड़े काले सर्प से दंशिना व्यक्ति स्वयं को कर्ता मानने लगता है और यही कर्ता भाव उसके दुखों अर्थात तनाव, बेचैनी का कारण बनकर अनेक रोगों को जन्म देता है। वैसे तो प्राय सभी व्यक्ति मूलतः रुग्ण हैं, क्योंकि इन उन्नीस मुखों में से किसी न किसी मुख का भोजन गलत होना ही है फलस्वरूप किसी न किसी प्रकार की रुग्णता आनी ही है। फिर भी प्रचलित रोग जैसे हाईब्लड प्रेशर, मधुमेह, बद्ध कोष्ठता, टायफाईड, त्वचा के रोग आदि कितनी भी मेडिकल जाँच करवाने पर रोग के मूल कारण एवं स्वभाव को जानना असंभव सा है। आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान प्रगति का कितना भी दम भरे, वह व्यक्ति को स्वास्थ्य नहीं दे सकता। महर्षि पतंजलि का सूत्र "योगांग अनुष्ठानात अशुद्धि क्षये, ज्ञान-दीप्तिरू विवेक ख्यातेः" महत्वपूर्ण है। मनुष्य स्वस्थ तभी होगा जब उसके भीतर की अशुद्धि खत्म होगी, अंतर्शान का उदय एवं विवेक की प्राप्ति होगी और इन तीनों को प्राप्त करने का एक ही मार्ग है अनुष्ठान पूर्वक 'योग' एवं प्राकृतिक चिकित्सा का अभ्यास व आचरण का पालन।

डॉ० जंगवीर सिंह
अनुभाग अधिकारी (प्रशासन विभाग)
प्रधान कार्यालय

पवन हंस में प्रचलित शब्द

Administration	:	प्रशासन
Advisor	:	सलाहकार
Audit	:	लेखा परीक्षा
Aviation Safety and Quality Assurance	:	विमानन संरक्षा एवं गुणवत्ता आश्वासन
Board of Director	:	निदेशक मंडल
Chairman and Managing Director	:	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chief Financial Officer	:	मुख्य वित्तीय अधिकारी
Competent Authority	:	सक्षम प्राधिकारी
Compliance	:	अनुपालन
Controlling Office	:	नियंत्रक कार्यालय
Corporate Office	:	प्रधान कार्यालय
Dearness Allowance		महंगाई भत्ता
Engineer	:	अभियंता
Executive Director	:	कार्यपालक निदेशक
Finance and Accounts	:	वित्त एवं लेखा
Human Resource	:	मानव संसाधन
In-charge	:	प्रभारी
Joint Secretary	:	संयुक्त सचिव
Legal	:	विधिक
Officiating General Manager	:	स्थानापन्न महाप्रबंधक
Operation	:	परिचालन
Maintenance	:	अनुरक्षण
Management	:	प्रबंधन
Manager	:	प्रबंधक
Pay and Allowance	:	वेतन एवं भत्ता
Pay Scale	:	वेतनमान
Pending	:	लंबित
Profile	:	रुपरेखा
Recovery	:	वसूली
Regional	:	क्षेत्रीय
Secretary	:	सचिव
Section Officer	:	अनुभाग अधिकारी
Travel Allowance	:	यात्रा भत्ता
Vigilance	:	सर्तकता
Executive Director	:	कार्यपालक निदेशक
Executive Assistant	:	कार्यपालक सहायक
Officer on Special Duty	:	विशेष कार्य पदाधिकारी
Secretarial Officer	:	सचिवीय अधिकारी

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

राजभाषा हिंदी – नए टूल्स

आज तेजी से बदलती हुई इस दुनिया में आधुनिक तकनीक से अद्यतित अर्थात अप-टू-डेट रहना हमारे लिए आवश्यक हो गया है। ऐसा ही कुछ हाल हमारी भाषा का भी है। दुनिया भर में कई भाषाएं बोली जाती हैं या फिर यूं कहें की किसी भाषा में उस देश या समाज की सभ्यता और संस्कृति छुपी होती है। आज किसी भी विकसित देश को देख लीजिए, एक ओर जहां उन्होंने अपने देश को विकसित किया है वहीं अपनी भाषा को आधुनिक तकनीक के अनुसार विकसित किया है। वे अपना काम-काज अपनी भाषा में ही करते हैं, जैसे चीन में चीनी भाषा में, फ्रांस में फ्रेंच भाषा में, जापान में जापानी भाषा में, जर्मनी में जर्मन भाषा में, स्पेन में स्पैनिश भाषा में, इंग्लैंड में अंग्रेजी भाषा में व संयुक्त राज्य अमेरिका में अंग्रेजी भाषा में।

हम सभी जानते है कि संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अंतर्गत हिंदी हमारी राजभाषा है जिसकी लिपि देवनागरी है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है। इस की निरंतरता में अनेक कार्य किए जाते हैं। कंप्यूटर पर अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषा में कार्य करने के बंधन टूट चुके हैं। आज अंग्रेजी की ही तरह हिंदी में भी पर्याप्त मात्रा में वेबसाइट, ब्लॉग, ई-मेल, चैट, मोबाइल पर संदेश, सर्च इंजिन, शब्द संसाधन आदि उपलब्ध हैं। तकनीक के बदलते परिदृश्य में हिंदी में आधुनिक ई-टूल्स जैसे हिंदी की-बोर्ड के लेआउट, ऑनलाइन शब्दकोश, कंप्यूटर के द्वारा मशीनी अनुवाद, बोलकर लिखने की सुविधा इत्यादि और अन्य प्रकार के सॉफ्टवेयर भी सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं। इन्हीं आधुनिक ई-टूल्स का लाभ उठाते हुए हिंदी में कार्य को सरल बनाने के लिए राजभाषा विभाग ने हिंदी के कुछ आधुनिक ई-टूल्स विकसित किए है, जो आज इस कंप्यूटर की दुनिया में ऑफ-लाइन मोड में हिंदी में काम करने में अत्यंत सहायक हैं। इसी श्रेणी में इंडिक माइक्रोसाफ्ट का सबसे नवीनतम टूल है जो कंप्यूटर में हिंदी में काम करने में अत्यंत सहायक है। इसे http://bhashaindia.com/ilit से डाउनलोड किया जा सकता है, राजभाषा विभाग द्वारा इसके इस्तेमाल की सलाह दी जाती है।

इस के माध्यम से टंकण कार्य अत्यंत सरल है। तकनीकी आधुनिकता से प्रेरणा लेते हुए सी-डैक ने कुछ की-बोर्ड विकसित किए है जो फॉनेटिक, रोमन या ट्रांस्लिट्रेशन की-बोर्ड कहलाता है। यह विशेषकर उन लोगों के लिए उपयोगी है जो हिंदी टंकण नहीं जानते हैं। इसके माध्यम से वे बिना किसी परेशानी के हिंदी में टंकण कर सकते हैं। हिंदी में कुछ ऐसे पारंगत लोग भी है जो अंग्रेजी की भांति हिंदी टंकण में भी पारंगत होना चाहते है और जिन्होंने विशेष तौर पर हिंदी टंकण भी सीखी है। उनके लिए अलग-अलग की-बोर्ड का विकल्प है जो विशेषकर टंकण जानने वालों के लिए सुविधाजनक है।

कई लोगों को अक्सर शिकायत रहती है कि उनके कंप्यूटर में यूनिकोड फॉन्ट उपलब्ध नहीं है इसलिए वे हिंदी में काम करने में असमर्थ है, पर शायद वे यह नहीं जानते की भाषा की महत्ता को तो माइक्रोसाफ्ट बनाने वाली कंपनी भी जानती है, तभी तो भाषा चयन का अधिकार हमें होता है कि हम किस भाषा में काम करना चाहते हैं। इसके लिए हमें अपने कंप्यूटर के कंट्रोल पैनल में जाकर रीजन और लैंगवेज चुनकर काम करने वाली भाषा का चयन करना होगा। वह अंग्रेजी सहित कोई भी भाषा हो सकती है। चुनी गई भाषा यदि हिंदी है तो उससे टाइप किस की-बोर्ड में करना है यह हमें चयन करना होगा।

आज के इस दौर में शायद ही कोई कार्यालय होगा जो ऑनलाइन मोड में गूगल का प्रयोग न करता हो। गूगल के लिए यह तक कहा जाता है कि दुनिया का शायद ही ऐसा कोई प्रश्न होगा जिसका जवाब गूगल न दे सके। सवाल कोई भी हो मुश्किल या आसान गूगल के पास हर सवाल का जवाब है। गूगल के पास हिंदी में कार्य आसान करने का भी मार्ग है और वो भी बिना किसी टंकण के, इस के लिए आपको सिर्फ एक हेडफोन और माइक की आवश्यकता होगी। इस अद्भुत सुविधा का लाभ कोई भी उठा सकता है इस के लिए आपका बस एक गूगल अकाउंट होना चाहिए। इस के लिए गूगल एप्लीकेशन में मोर पर क्लिक कर → डॉक्स पर क्लिक करें → न्यू डॉक्यूमेंट खोलें → बने माइक पर जाकर भाषा का चयन करें → माइक पर क्लिक कर चयनित भाषा में अपने पत्र, नोट इत्यादि मौखिक रूप से बोलें जिसे मशीन सुनकर अपने आप ही टाइप करने लगेगी। जिसे आप बाद में एडिट कर सकते हैं व अपने कंप्यूटर पर वर्ड फाइल में कॉपी-पेस्ट कर सेव भी कर सकते हैं।

इस के अतिरिक्त यदि आपके पास गूगल अकाउंट नहीं है और आपको किसी दस्तावेज का अनुवाद करना है फिर वो चाहे एक्सेल शीट हो या पीडीएफ हो (पीडीएफ स्कैन की हुई न हो) या वर्ड डॉक्यूमेंट इन सब का अनुवाद गूगल के द्वारा मिनटों में किया जा सकता है। आपको बस translate.google.co.in पर जाकर डाक्यूमेंट अपलोड करना है और अनुवाद की लक्षित भाषा का चयन करना है। यदि

आप चाहते है कि गूगल पर आप काम-काजी भाषा में ही अनुवाद करें तो इसके लिए आप को गूगल की थोड़ी मदद करनी होगी, करना सिर्फ इतना होगा की translation.google.com/toolkit पर जाएं (इसके लिए आप का गूगल अकाउंट होना आवश्यक है), फाइल अपलोड करें → अनुवाद की लक्षित भाषा का चयन करें → नेक्स्ट पर क्लिक करें → चेंज पर क्लिक करें → फाइल ओपन करें → ऑनलाइन ही मशीन द्वारा किए अनुवाद की गलतियों को ठीक करें। जिसे गूगल आप के अकाउंट के सर्वर पर सेव करता जाएगा। जिससे एक बड़ी मात्रा में डेटा इकठ्ठा हो जाएगा, जिसकी मदद से गूगल फाइल का अनुवाद करेगा। जो आपके द्वारा दिए गए डाटा के हिसाब से काम-काजी भाषा में ही होगी।

कंप्यूटर पर हिंदी के आधुनिक ई-टूल्स की चर्चा करने के बाद हम मोबाइल को कैसे पीछे छोड़ सकते है। कंप्यूटर की ही भांति आज लोग मोबाइल से भी काम करते है। मोबाइल को यदि हम मिनी कंप्यूटर कहें तो गलत नहीं होगा। हम मोबाइल पर भी हिंदी टंकण कर सकते है करना सिर्फ इतना है कि गूगल प्ले स्टोर पर जाकर गूगल इंडिक की-बोर्ड डाउनलोड कर लें और उसमें से दी गई भाषाओं में से अपनी भाषा का चयन कर चैटिंग करें या गूगल डॉक पर काम करें। हां यह अवश्य ध्यान रखें की आप का माइक काम करने की अवस्था में है और ठीक चल रहा है।

आज हिंदी भाषा में इतने ई-टूल्स उपलब्ध हो गए है कि अब कंप्यूटर व मोबाइल पर हिंदी में काम करना और छोटे मोटे अनुवाद करना एकदम सरल व सुलभ हो गया है जिससे हम बिना किसी परेशानी के हिंदी में ही आसानी से पत्राचार व चैटिंग कर सकते हैं और हिंदी में प्रचार व प्रसार को बढ़ावा दे सकते हैं।

प्रस्तुतिः राजभाषा अनुभाग

भारतीय विमानन के सपने को साकार करते हुए पवन हंस

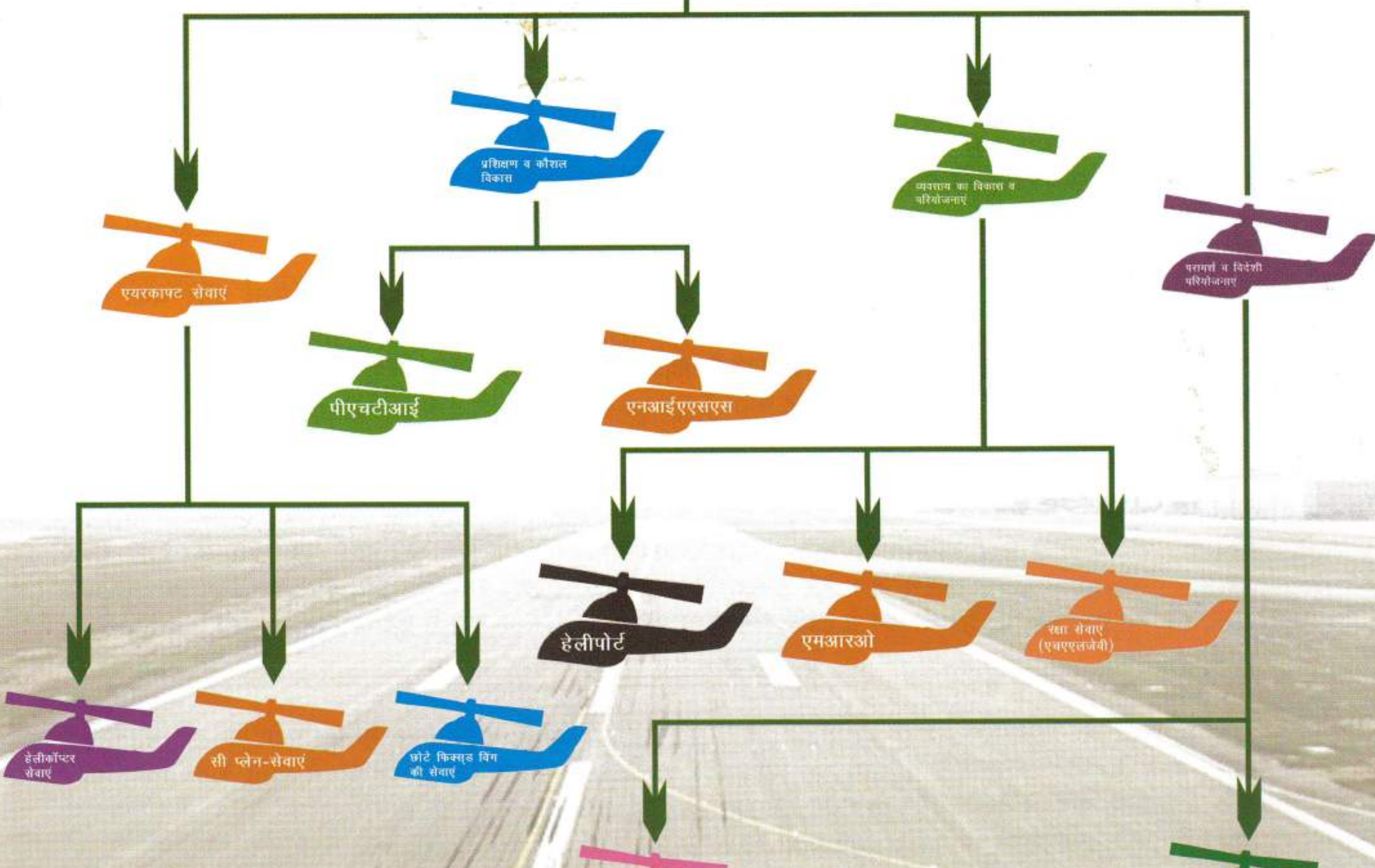

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सुबह गुनगुने पानी में शहद डालकर पीने के लाभ

इस बात से हम सभी जानते हैं कि सुबह एक गिलास गुनगुने पानी में नींबू का रस और शहद मिलाकर पीना स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। शहद को गर्म पानी के साथ लेने से वज़न कम होता है और इसके नियमित सेवन से सेहत से जुड़ी कई समस्याओं से हमेशा के लिए निजात मिल सकती है।

1. पाचन सुधारे

अच्छे पाचन के लिए सुबह गर्म पानी में शहद और नींबू मिलाकर पीना चाहिए। यह पेट को साफ करने में मदद करता है। यह लीवर में रस के उत्पादन को बढ़ाता है जिससे पाचन में मदद मिलती है। नींबू में मौजूद एसिड आपके पाचन तंत्र में मदद करता है और अवांछित विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। इसके अलावा शहद एक एंटीबैक्टीरियल के रूप में कार्य करता है और आपके शरीर में मौजूद किसी भी तरह के संक्रमण को दूर करने में मदद करता है।

2. कब्ज दूर करें

यह मिश्रण कब्ज के लिए तत्काल उपाय है। यह आंत को प्रोत्साहित कर मल त्यागने में मदद करता है। इसके अलावा यह आंत्र म्यूकस में बढ़ावा देता है, पेट को हाइड्रेट करता है और सूखे मल को पानी में भिगो देता है। इन सब की एक साथ मौजूदगी से मल त्यागने में मदद करता है।

3. लसीका प्रणाली की सफाई में मददगार

लसीका प्रणाली में पानी और आवश्यक तरल पदार्थ की कमी हो जाती है जिससे आपको सुस्त और थका हुआ महसूस होना, कब्ज, सोने में परेशानी, उच्च या निम्न रक्तचाप, तनाव और मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। सुबह-सुबह इस मिश्रण को पीने से लसीका प्रणाली को हाइड्रेट होने में मदद मिलती है जिससे न केवल सभी उपरोक्त लक्षणों बल्कि प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार होता है।

4. मौखिक स्वास्थ्य में सुधार

एसिडिक प्रकृति का नींबू, शहद और गुनगुने पानी के साथ सांसों की बदबू को तुरंत दूर करने में मददगार होता है। नींबू अपनी लार ग्रंथियों को सक्रिय और आक्रामक बैक्टीरिया को मार कर मुंह शुद्ध करने में मदद करता है। सांस में बदबू का कारण जीभ पर सफेद परत का गठन (मुख्य रूप से खाद्य और बैक्टीरिया से मिलकर) भी है, यह रस इस परत को प्रभावी ढंग से हटाकर सांस की बदबू से प्राकृतिक रूप से छुटकारा दिलाता है।

5. मूत्रवर्धक के रूप में कार्य

शहद में बहुत ही शक्तिशाली एंटी-बैक्टीरियल के गुण होते हैं। इसमें कई प्रकार के संक्रमण को दूर करने की क्षमता होती है। नींबू और पानी के साथ यह मिश्रित - एक उत्कृष्ट मूत्रल (आपके शरीर से पानी बाहर निकलवाने वाला एजेंट) के रूप में कार्य करता है। यह आपके मूत्र मार्ग को साफ करने का सबसे अच्छा तरीका है। यूटीआई (यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्शन) से पीड़ित महिलाओं के लिए यह रस एक वरदान की तरह है क्योंकि यह संक्रमण को दूर करने में मदद करता है।

6. एनर्जी लेवल बढ़ाये

शहद और गर्म पानी से शरीर में एनर्जी में भी वृद्धि होती है। शरीर में ज्यादा एनर्जी उत्पन्न होने से शरीर का मेटाबॉलिज्म और कार्यप्रणाली में भी वृद्धि होती है। शहद शरीर के अंगों को ठीक से काम करने के लिए प्रेरित करता है। सुबह में गर्म पानी नींबू के साथ लेने से आप दिन भर ऊर्जावान बने रह सकते हैं।

7. वजन घटाने में मददगार

शहद और नींबू के साथ गर्म पानी लेने से भूख कम लगती है। शहद और नींबू के साथ गर्म पानी में बड़ी मात्रा में फाइबर मौजूद होता है, जो भूख की इच्छा और शूगर लेवल को कम करके पर्याप्त एनर्जी प्रदान करता है। इस तरह से नियमित रूप से सुबह इसका सेवन करने से दिन भर में आपके द्वारा लिए गए भोजन की मात्रा कम हो जाएगी। अपने दिन की शुरुआत गुनगुने पानी के साथ शहद और नींबू के साथ करने से आपका वजन काफी हद तक कम हो जाएगा।

8. त्वचा के लिए लाभकारी

त्वचा के लिए नींबू के लाभ अनगिनत हैं लेकिन इसके अलावा इसमें मौजूद क्लीजिंग तत्व रक्त को शुद्ध करने में मदद करता है, नई रक्त कोशिकाओं के उत्पादन में मदद करता है। पानी और शहद का मिश्रण आपकी त्वचा के लिए एक अनूठा दृढ, जीवाणुरोधी और कोलेजन बढ़ाने वाले गुण होते है। इसलिए अगर आप स्वाभाविक रूप से चमकदार त्वचा चाहती हैं तो यह पेय आपके लिए बहुत लाभकारी साबित होगा।

9. पोषक तत्वों और विटामिन से भरपूर

शहद और नींबू के गर्म पानी में कई जरूरी एंटी-आक्सीडेंट, विटामिन और पोषक तत्व पाए जाते हैं, इसके अलावा इसमें एंटी इफ्लेमेंटरी गुण भी मौजूद होते है। इसलिए इसके सेवन से शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है। साथ ही यह वजन कम करने में सहायक होती हैं।

10. रोग प्रतिरोधी क्षमता में मजबूती

शहद का सेवन शरीर के लिए काफी फायदेमंद है इसीलिए डॉक्टर हमेशा इसके सेवन की सलाह देते हैं। शहद के साथ नींबू और गुनगुने पानी के नियमित सेवन से शरीर की प्रतिरोधी क्षमता बढ़ती है। शहद और नींबू में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स और कई पोषक तत्व शरीर को मौसम बदलने के साथ होने वाले संक्रमणों से दूर रखने में मदद करते हैं।

प्रस्तुतिः हंसध्वनि फीचर डेस्क

छाया संसार

01

02

03

04

05

06

07

08

09

10

11

12

1–4 → नागर विमानन मंत्रालय के संयुक्त सचिव, संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, सचिव एवं माननीय राज्य मंत्री द्वारा पवन हंस की डायरी व कैलेंडर का अनावरण।

5–6 → ओएनजीसी को पवन हंस लिमिटेड द्वारा लाभांश का भुगतान।

7 → अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, पवन हंस लिमिटेड की उप राज्यपाल (दिल्ली) से भेंटवार्ता।

8 → भारत में हेली पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पवन हंस का आईआरसीटीसी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर।

9–12 → अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन, दिनांक 21 जून, 2016 उत्तरी क्षेत्र व प्रधान कार्यालय की झलकियाँ।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी हमारे देश की एकता में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होगी, इसमें दो राय नहीं। — जवाहरलाल नेहरू

छाया संसार

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

13–14 → परिवहन, पर्यटन और संस्कृति संबंधी संसदीय स्थाई समिति के सदस्यों द्वारा रोहिणी हेलीपोर्ट, नई दिल्ली का निरीक्षण।

15 → स्थानापन्न महाप्रबंधक (मासं) सह प्रमुख (प्रशासन) श्री आर बी कुशवाहा की सेवानिवृति का समारोह व इस क्रम में सेवानिवृत कार्मिकों हेतु बंधन पोर्टल का अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक व मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा विमोचन।

16–17 → संसदीय राजभाषा समिति द्वारा नई दिल्ली स्थित क्षेत्रीय कार्यालय के निरीक्षण के दृश्य।

18 → पवन हंस लिमिटेड के निदेशक मंडल की बैठक के दौरान गहन विचार सत्र।

19–21 → मुम्बई स्थित पश्चिमी क्षेत्र कार्यालय में संपन्न विभिन्न कार्यक्रमों के दृश्य।

22–24 → संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा कवारती स्थित बेस कार्यालय के निरीक्षण की झलकियाँ।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

पवन हंस लिमिटेड के कर्मचारियों अधिकारियों का राजभाषा संबंधी दायित्व

1. प्रत्येक अवसर पर अपने हस्ताक्षर हिंदी में ही करें।
2. सभी प्रकार की छुट्टियों के आवेदन पत्र हिंदी में ही भरें।
3. त्योहार अग्रिम, अवकाश यात्रा रियायत अग्रिम तथा कार्यालयी कामकाज के लिए मांगी जाने वाली अग्रिम राशि के आवेदन पत्र हिंदी में ही भरें/ लिखें।
4. वेतन प्रमाण पत्र, पासपोर्ट आदि के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र, परीक्षा देने के लिए अनुमति प्राप्त करने, घर से छुट्टी के लिए आवेदन पत्र भेजने आदि के लिए आवेदन पत्र हिंदी में ही लिखें।
5. कार्यालय में कामकाज संबंधी समस्या या शिकायत के लिए पत्राचार हिंदी में ही करें।
6. अपनी दैनिकी (डायरी) हिंदी में ही लिखें।
7. कार्यालय के सभी आंतरिक पत्र जैसे नोट, टिप्पणी, मसौदा आदि एवं बाह्य पत्राचार हिंदी में करें।
8. सभी परिपत्र, कार्यालय आदेश, ज्ञापन, विज्ञापन आदि द्विभाषी (हिंदी अंग्रेजी) जारी करें।
9. सभी मूल पत्र हिंदी में ही जारी करें।
10. हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्यतः हिंदी में ही दें।
11. सभी फाइलों तथा रजिस्टरों में प्रविष्टियों को हिंदी में ही करें।
12. रबड़ की मुहरें द्विभाषी (हिंदी अंग्रेजी) ही बनवाएं।
13. सभी भुगतान वाउचर हिंदी में तैयार करें।
14. सभी चैक हिंदी में ही जारी करें।
15. सभी पत्रों / लिफाफों पर नाम पते हिंदी में लिखें।
16. कार्यालय में आयोजित किसी भी समारोह के आमंत्रण पत्र हिंदी में ही होने चाहिए।
17. कार्यालय द्वारा सामयिक पत्रिकाएं हिंदी में ही प्रकाशित कराई जाएं।
18. कार्यालय द्वारा आयोजित सेमिनारों, कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि में सभी व्याख्यान हिंदी में ही करें।
19. कार्यालय द्वारा आयोजित सभी प्रकार के समारोहो में पूरा कार्यकलाप हिंदी में ही संपन्न करें।
20. मन में सदैव विश्वास रखें हिंदी में काम करना आसान है।

पवन हंसों की टोली

आए हैं भारत के कोने कोने से ये हंस
बोले हैं जो विभिन्न बोली
खेलें रंगों से होली
पवन हंसों की टोली

कोई बोले मराठी तो कोई गुजराती
कोई पंजाबी तो कोई मलयाली
कोई राजस्थानी तो कोई भोजपुरी
ऐसी कईयों बोले है बोली
पर हो संग एक ही प्रेम रंग में
खेलें रंगों से होली
पवन हंसों की टोली

कभी ये झील झरनों पर उड़ते
तो समंदर में गोते लगाते
देवी देवताओं के दर्शन हैं कराते
देने-मन को आनंद जॉय राईड हैं कराते
खेलें रंगो से होली
पवन हंसों की टोली

कोई भी हो कार्य
छोटा या बड़ा
मुश्किल या आसान
हंस कभी काम से जी न चुराते
हर कार्य को पूरा कर मुस्कुराते
हंसते गाते मंजिल को पाते
खेलें रंगों से होली
पवन हंसों की टोली

है इन हंसों का मकसद
आसमान को छूना
दुनिया में अपने पंखों को फैलाना
विश्व में अव्वल स्थान है पाना
इसलिए करते हैं ये अथक प्रयास
तो सफलता रहेगी हमेशा इनके साथ
खेलें रंगों से होली
पवन हंसों की टोली

गा रहा ये जग इस अनोखे पवन हंस की भाषा
हो रहे इसके चर्चे नित्य दिन अखबारों में
बन गया है ये सबका चहिता
क्योंकि इसने हैं हर मन को जीता
अपने नेक मकसद व कार्यों से
खेलें रंगों से होली
पवन हंसों की टोली

श्रीमती अफरोज़ दलवी
सचिवीय अधिकारी (वित्त एवं लेखा विभाग)
पश्चिमी क्षेत्र

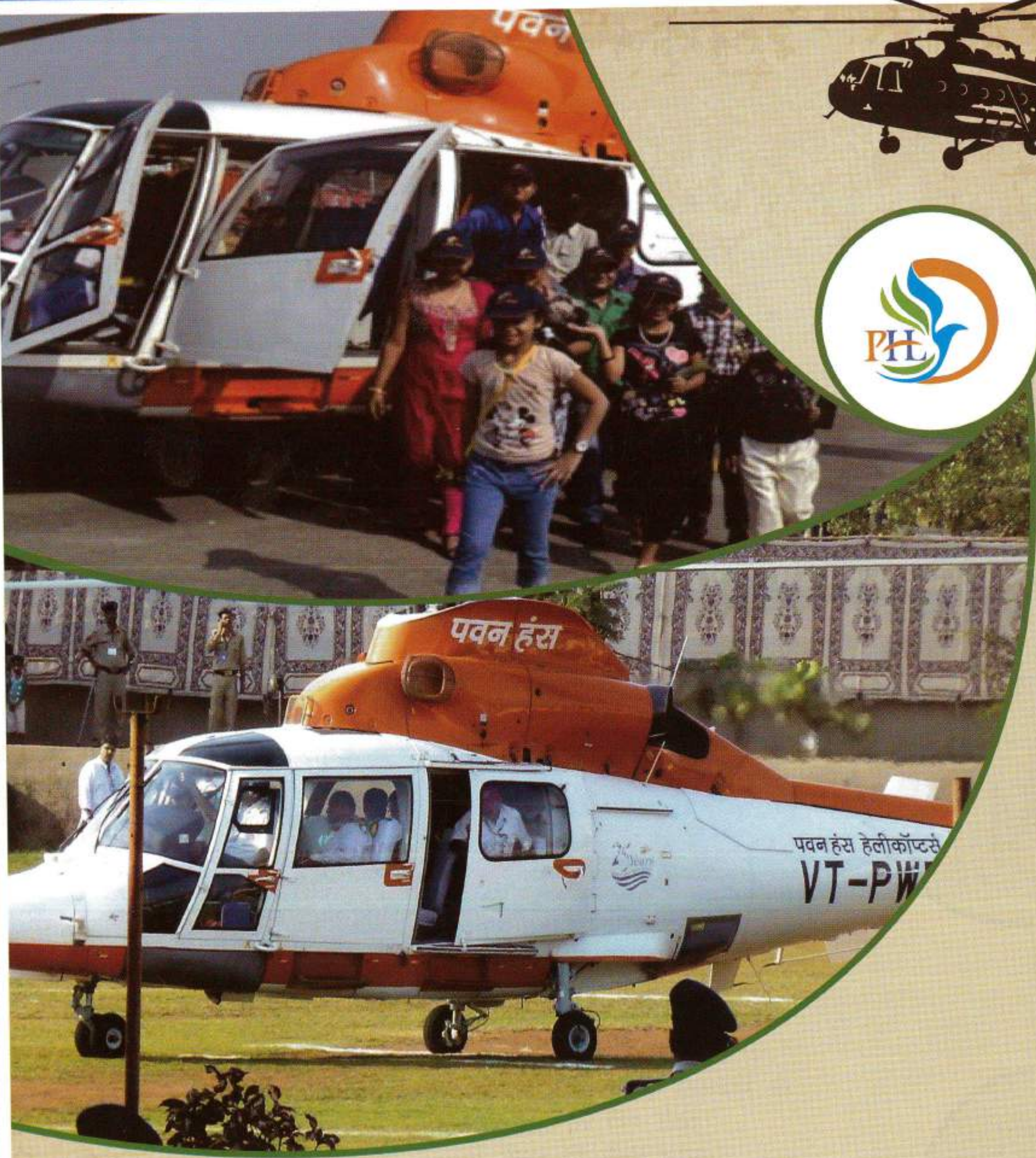

CORPORATE OFFICE:
Pawan Hans Tower
C-14, Sector-1, Noida-201301,
Distt. Gautam Budh Nagar, (U.P.)
Tel: 0120-2476703, Fax: 0120-2534311
E-mail: corp.affairs@pawanhans.co.in

पवन हंस लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

Pawan Hans Limited

(A Government of India Enterprise)

NORTHERN REGION:
Safdargung Airport, New Delhi - 110003
Tel: 011-2476810, Fax: 011-24610764
E-mail: gm_nr@pawanhans.co.in

WESTERN REGION:
Juhu Aerodrome, S.V. Road,
Vile Parle (West), Mumbai - 400-056
Tel: 022-2626170, Fax: 022-26146926, 26261704
E-mail: gm_wr@pawanhans.co.in

EASTERN REGION:
Pawan Hans Hangar, LBI Airport,
Guwahati - 781015
Tel: 0361-2842175/76, Fax: 0361-2842177
E-mail: gm_er@pawanhans.co.in